स्वदेशी अर्थशास्त्रम्

SWADESHI ARTHSHASTRAM

A FORTNIGHTLY NEWSLETTER 01-15th December, 2024

स्वदेशी शोध संस्थान
धर्मस्य मूलं अर्थः

Economics & more...

Special Article

Analysing Sustainability Movements through Indian Thoughts

~Anushka Verma

Sustainability has become one of the major concerns of the 21st century. Environmental degradation, resource depletion, climate change, and social inequalities are increasing each day, resultantly the need for sustainability movements that address these issues has grown. At the heart of sustainability is the idea of living in a way that meets present needs without jeopardising the ability of future generations to meet theirs. Sustainability movements have emerged worldwide to advocate for the responsible use of resources, equitable economic systems, and environmental protection.

Read More...

News at glance...

Newly appointed RBI Governor Sanjay Malhotra says 'stability, trust and growth' 3 pillars of economy
Read more..

Over 16 lakh direct jobs created by DPIIT-recognised startups: Piyush Goyal
Read more..

GST collection rises 8.5% to Rs 1.82 lakh cr in Nov
Read more..

RBI increases collateral-free loan limit for farmers to Rs 2 lakh
Read more..

Windfall tax on oil scrapped
Read more..

81% of small organisations to digitise their tax operations in 5 years: Survey
Read more..

No change in India's stance to stay out of RCEP
Read more..

Research Article

MAJOR EXPORTS OF INDIA FROM 1947 TO 1990 (TRENDS AND DIRECTIONS)

-Nishant Chaturvedi

Before Independence, Indian trade was essentially colonial and biased against the Indian economy, favoring British interests. Once independence was achieved, the trading pattern of India became suited to a developing nation's needs. Foreign trade increased from ₹12.5 billion in 1950-51 to ₹190 billion in 1980-81 and further to ₹2,281.10 billion in 1995-96.

Read More...

More Updates

Bank of Baroda launches loan scheme for women MSMEs & overdraft facility
Read more..

12 million MSMEs digitised, $13 billion in e-commerce exports enabled
Read more..

World Bank approves $188.28 million loan to Maharashtra
Read more..

IIP growth rises to 3-month high of 3.5% in Oct
Read more.

India's Maritime Future Sarbananda Sonowal
Read more.

Success Story

श्रीमती सुजाता शेषाद्रि नाथन बसिज फंड विदेश में कार्यरत युवा जोड़े ने मेक इन इंडिया से प्रभावित होकर स्वदेश में बिलियन डॉलर कंपनी खोली।

श्रीमती सुजाता शेषाद्रीनाथन ने अपनी आई टी की पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात कुछ समय तक नौकरी करी। उनके पति आदित्य जी फाइनेंस प्रोफेशनल थे। दोनों ही विदेश में कार्यरत थे। विदेश में अंतरराष्ट्रीय फंड प्रशासन उद्योग में लबे समय तक कार्य करने के पश्चात वह उन फाइनेंशियल सेवाओं को भारत में लाना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने 2006 मैं बसिज फंड की शुरुआत करी। उनकी पत्नी श्रीमती सुजाता जी इस कंपनी के आई टी डिपार्मेंट को संभाल रही थीं। दोनों का उद्देश्य भारत में इस तरह की सेवाओं का प्रचलन करने का था।

दो साल में ही उनके फंड खत्म होने लगे एवं कंपनी घाटे में जाने लगी। तब 2018 में बसिज फंड में निजी इक्विटी निवेश हुआ और कंपनी अब तरक्की करने लगी।इनकी कंपनी फंड एडमिनिस्ट्रेटर, फंड इन्वेस्टर, हेज फंड्स, प्राइवेट इक्विटी फंड्स जैसी कई अन्य सुविधाएं देती है। बसिज़ पिछले 19 वर्षों से कार्यरत है और वैश्विक फंड प्रशासन और वित्तीय रिपोर्टिंग क्षेत्र में आज एक अग्रणी खिलाड़ी है, जो दुनिया भर में $150 बिलियन से अधिक की संपत्ति अलग-अलग तरीके से निवेश करता है। कंपनी के कार्यालय महाराष्ट्र गुजरात एवं त्रिपुरा में स्थित हैं। पीएम मोदी जी के "मेक इन इंडिया" से प्रेरित होकर, कंपनी ने दिसंबर 2021 में त्रिपुरा सरकार के साथ एक समझौता किया। बासिज़ एम.ओ.यू का सम्मान करने वाली और जुलाई, 2022 में त्रिपुरा में एक कार्यालय स्थापित करने वाली पहली इकाई थी, जिसका उद्घाटन त्रिपुरा के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. माणिक सहजी जी ने किया था। आज उनकी कंपनी एक सो अस्सी लोगों को रोजगार प्रदान करती है जिसका सालाना टर्नओवर लगभग तीस करोड रुपए हैं। व्यापार के अलावा बसिज़ फंड्स समाज के लिए भी अपना भरपूर योगदान देती हैं। उन्हीं के द्वारा निर्मित एन जी ओ सुजाता शेष फाउंडेशन जरूरतमंद बच्चों की पढ़ाई, औरतों के उत्थान, पानी बचाओ एवं अन्य सामाजिक समस्याओं पर कार्य करती है।

SSS EVENT

जेसी बोस विवि और स्वदेशी शोध संस्थान में समझौता

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

फरीदाबाद में जेसी बोस और स्वदेशी शोध के बीच हुआ समझौता।

जेसी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद ने स्वदेशी शोध संस्थान, नई दिल्ली के साथ समझौता किया हैं। स्वदेशी स्वावलंबन न्यास ट्रस्ट के तहत संचालित स्वदेशी शोध संस्थान भारतीय ज्ञान प्रणाली और अनुसंधान को बढ़ावा देने के साथ-साथ पूरे देश में स्वदेशी के सिद्धांतों के प्रति जागरूकता लाने की दिशा में काम कर रहा है।

समझौते पर जे.सी. बोस विश्वविद्यालय की कुलसचिव डॉ. मेहा शर्मा और स्वदेशी शोध संस्थान के सलाहकार श्री सुरेश गुप्ता ने हस्ताक्षर किए। समारोह में विश्वविद्यालय के प्रमुख अधिकारियों ने भाग लिया, जिनमें निदेशक (अनुसंधान एवं विकास) प्रो. मनीषा गर्ग, कंप्यूटर एप्लीकेशन विभाग की अध्यक्षा डॉ. शिल्पा सेठी और सहयोग एवं उद्योग संपर्क प्रभारी डॉ. रश्मि पोपली शामिल रहे। इस साझेदारी का उद्देश्य प्रशिक्षण, कौशल विकास, उद्यमिता और रोजगार गतिविधियों के आयोजन में आपसी सहयोग को बढ़ावा देना है। यह विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान प्रणाली पर केंद्रित सहयोगी शैक्षणिक, अनुसंधान और विस्तार पहलों को बढ़ावा देने पर बल देगा। इसके अतिरिक्त मूल्य-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने, उनमें राष्ट्रीय चरित्र को विकसित करने और उनके समग्र विकास के लिए काम करेगा।

शोध संस्थान के साथ किया समझौता

पल पल न्यूज: चंडीगढ़ , 20 नवंबर। जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद ने स्वदेशी शोध संस्थान, नई दिल्ली के साथ समझौता किया हैं। स्वदेशी स्वावलंबन न्यास ट्रस्ट के तहत संचालित स्वदेशी शोध संस्थान भारतीय ज्ञान प्रणाली और अनुसंधान को बढ़ावा देने के साथ-साथ पूरे देश में स्वदेशी के सिद्धांतों के प्रति जागरूकता लाने की दिशा में काम कर रहा है। समझौते पर जे.सी. बोस विश्वविद्यालय की कुलसचिव डॉ. मेहा शर्मा और स्वदेशी शोध संस्थान के सलाहकार श्री सुरेश गुप्ता ने हस्ताक्षर किए। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुशील कुमार तोमर ने समझौता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए स्वच्छ प्रौद्योगिकीय अनुसंधान के महत्व पर प्रकाश डाला तथा इस दिशा में स्थायी ऊर्जा अनुसंधान को आगे बढ़ाने के प्रयासों के लिए स्वदेशी शोध संस्थान की सराहना की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के छात्रों को इस सहयोग से काफी लाभ होगा।

J.C. Bose University Partners with Indigenous Research Institute

J.C. Bose University of Science and Technology, YMCA, Faridabad has signed an agreement with the Indigenous Research Institute, New Delhi. This partnership aims to promote indigenous research and knowledge systems in India, as well as raise awareness about the concept of 'Swadeshi' across the country.

स्वदेशी विचार

-रवींद्रनाथ टैगोर

"स्वदेशी न केवल आर्थिक स्वराज का माध्यम है, बल्कि यह हमारी आत्मा को भी स्वतंत्र बनाता है।"

Our Social Media:

Editorial Board

Chief Editor : *Prof. Raj K Mittal*
Editor : *Prof. Sunita Baratwal*
Co-Editor : *Dr. Shabana*
Section Editor : *Ms. Urshita Bansal*
Technical & Design Team : *Mr. Vaibhav Pandey*
Mr. Naman Kashyap